ISSN 2319-8095
PROGRESSIVE RESEARCH JOURNAL
VOL 9 No 01 DEC 2016

मूल्यों का वर्गीकरण

★ डॉ दिनेश कुमार मौर्य

प्रत्येक देश के भावी नागरिकों के निर्माण का लक्ष्य विद्यालय द्वारा पूरा किया जाता है। भावी आदर्श नागरिको के निर्माण में विद्यालय की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। विद्यालय शिक्षा के सम्बन्ध में शिक्षा आयोग(1964–1966) का कथन है "कि भारत के भाग्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है, हमारा विश्वास है कि यह कोई चमत्कारिक नहीं है। विज्ञान और शिल्प विज्ञान पर आधारित इस दुनिया में शिक्षा ही लोगों की खुशहाल ,कल्याण और सुरक्षा के स्तर का निर्धारण कर सकती है विश्वविद्यालयों से निकलने वाले छात्रों की योग्यता और संख्या पर ही राष्ट्रीय पुननिर्माण के महत्वपूर्ण कार्य की सफलता निर्भर करेगी जिसका मुख्य लक्ष्य हमारे रहन सहन का स्तर ऊँचा उठाना है।"

मूल्य–अर्थ–

मूल्य व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनके किया कलाप ,व्यवहार आदि में निहित होते हैं, ये जीवन के केन्द्र बिन्दु हैं जिसके द्वारा उनकी समस्त व्यक्तिगत सामाजिक एवं सांस्कृतिक गति विधियां संचालित होती है व दिशा प्रदान करती हैं मानव मूल्यों को व्यक्ति का आधार भूत अंग व आयाम समझा जाता है तथा प्रत्येक समाज के अपने कुछ आदर्श व नितियां एवं मापदण्ड होते हैं जिसकी सहायता से व्यक्ति समाज की विशिष्ट वस्तुओं ,घटनाओं एं व्यक्तिगत व्यवहारों का मूल्यांकन करता है। यही प्रचलित लक्ष्य,नीतियां आदर्श एवं माप दण्ड मूल्य कहलाते हैं।

मूल्य व्यक्ति के वह अनुभव हैं जो समय की गति के साथ साथ बढ़ते जाते हैं। इन अनुभवों द्वारा कुछ सामान्य सिद्धान्तों का जन्म होता है जो मानव व्यवहार को निर्देशत करता है तथा मूल्य ही व्यक्ति को समाज में व्याप्त तत्वों की सत्यता एवं असत्यता से परिचित कराते है तथा सही मार्ग चुनने में सहायता देंते है।

सामान्य रूप से मूल्य का अर्थ किसी व्यक्ति के उस गुण ये है जो उसे महत्वपूर्ण, सम्माननीय, उपयोगी एवं मूल्यवान बनाता है। मूल्य शब्द संस्कृत की मूल धत में यत् प्रत्य लगाने से बना है जिसका अर्थ होता है कीमत,महत्व,योग्यता,उत्तमता,मजदूरी आदि।

वस्तुतः मूल्य शब्द अंग्रेजी के Value शब्द का समानार्थक और सार्थक अनुबाद है Value शब्द लैटिन भाषा के शब्द Valeve से बना है। जिसका अर्थ होता है सुन्दर अच्छा । अतः मूल्य जो कुछ भी इच्छित है वही मूल्य है।

★ अध्यक्ष शिक्षा शास्त्र विभाग, एम० एल० के० (पी० जी०) कालेज बलरामपुर,उ०प्र०

Scanned with OKEN Scanner

मूल्य का वर्गीकरण

किसी वस्तु के प्रति एक ही समय में अलग अलग व्यक्तियों के मूल्य अलग अलग ह
है यह मूल्य वांछित और अवांछित दोनो तरह के होते हैं । मनुष्य के मन में इन मूल्यों को ले
अन्तर्द्वन्द की स्थिति रहती है वह अपने ज्ञान और अनुभव के आधार पर समय काल
परिस्थितयों के अनुसार मूल्यों का चुनाव करता है युग परिवर्तन के साथ साथ मूल्य भी बद
हैं आज के वैज्ञानिक व प्रौद्योगिकिये प्रधान युग में शिक्षा के प्रसार के वावजूद जीवन मूल्य
ह्रास दिखाई दे रहा है कि विद्यालय में मूल्यों के विकास हेतु विशिष्ठ एवं संगठित प्रयत्न कि
जाय समय की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए दार्शनिक व अन्य विद्वानों ने विविध मूल्यों
निश्चित किया है तथा उन्हें वर्गीकृत करने का प्रयास किया है जो इस प्रकार है। (Edw
spranger के Teype of Men *1928)* में दिये हुए वर्गीकरण के आधार पर मूल्यों को
वर्गो में लाया गया है।

1–धार्मिक मूल्य
2–सामाजिक मूल्य
3–प्रजातान्त्रिक मूल्य
4–सौन्दर्यात्मक मूल्य
5–आर्थिक मूल्य
6–ज्ञानात्मक मूल्य
7–सुखात्मक मूल्य
8–शक्ति मूल्य
9–परिवार प्रतिष्ठा मूल्य
10–स्वास्थ्य मूल्य

बी.एन.के.रेड्डी ने अपनी पुस्तक मैन एजूकेशन एण्ड वैल्यूज में निम्न प्रकार के मूल्यों का आ
किया है।

1. **भैतिक मूल्य**–ये मूल्य सहायक मूल्य होते हैं सम्पूर्ण विश्व यथार्थता का विस्तार है
यथार्थता भैतिक है। तथा जल,वायु,आकाश,पृथ्वी,व अग्नि इस यथार्थता के मूल्य अवयव
2. **मनोवैज्ञानिक मूल्य**–ये उच्च मूल्य हैं जो व्यक्ति के चिन्तन भावना, तथा इच्छा में संक
तथा भौतिक प्रकृति पर आधारित होते हैं।
3. **आर्थिक मूल्य**–मनुष्य को जीवन के लिए भोजन की आवश्यकता होती है समस्त समय
उनकी कार्य प्रणाली आर्थिक मूल्यों पर आधारित होती है शेवर तथा स्ट्रांग ने मूल्यों को
वर्गो में वर्गीकृत किया है।

क. **सौन्दर्यात्मक मूल्य**–ये वे मानदण्ड है जिनसे हम सुन्दरता का निर्णय करते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

ख. सहायक मूल्य– ये मानदण्ड किसी चर्चा उद्देश्य ,व्याख्यात्मक, प्रतियोगिता, समूह, निर्माण, गायन को प्रस्तुत करने के सर्वाधिक प्रभावी तरीके की जांच करने में प्रयुक्त करते हैं।
ग. नैतिक मूल्य– इन मूल्यों में वैयक्तिक या परिस्थितिक विषयक वरीयताएं जैसे शक्ति, सहभागिता, वफादारी, सहयोग धार्मिकता, ईमानदारी तथा सम्मान के लिए आधारभूत मान्यताएं जैसी मानव जीवन की पवित्रता, उचित प्रक्रिया समान सुरक्षा अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता निहित है।

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि विभिन्न क्षेत्रों से हमें विभिन्न प्रकार के मूल्य मिल सकते हैं अतः मूल्यों का वर्गीकरण कई ढंग से हुआ है।

1. *व्यक्ति निष्ठ और वस्तुनिष्ठ मूल्य प्रथम वर्ग है इससे तात्पर्य यह है कि जिन मूल्यों को व्यक्ति की इच्छा और आवश्यकता निश्चित करती है वे व्यक्ति निष्ठ होते हैं,दूसरी ओर वस्तुनिष्ठ मूल्य वस्तु और स्थिति पर निर्भर करते हैं। इनको हम आन्तरिक और वाह्य भी कह सकते है।*
2. *साधन मूल्य तथा सांस्कृतिक मूल्य द्वारा वर्गीकरण कहा जाता है । साधन मूल्यों की प्राप्ति का लक्ष्य स्वयमेव में नहीं होता है बल्कि वाह्यगत होता है इसी कारण इन्हें वाह्यगत भी कहा जाता है इनके चार उपभेद कहे जाते हैं।*

(अ) परिचयात्मक (ब) प्रयोगात्मक (स) सामाजीकरण करने वाले (द) रीति और प्रथा सम्बन्धी।

3. *नैतिक,धार्मिक,एवं आध्यात्मिक मूल्य. एक अन्य वगीकरण है। नैतिक हम अच्छे बुरें आशावादी निराशावादी जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य आचरण का माप आत्मवादी तथा परवादी आदि मूल्य की गणना करते हैं धार्मिक मूल्य शास्त्री विस्वासों पर निर्भर करते हैं पूजा–पाठ,प्रार्थना,भागवत भजन,सेवा,सत्कार आदि से ये मूल्य उदभुत होते हैं। आध्यात्मिक मूल्य आत्मिक विकास से सम्बन्ध रखते हैं जिनमें ईश्वर का परम तत्व छिपा रहता है।*
4. *चरम(अन्तिम) मूल्य तथा मूल मूल्य एक दूसरा वर्गीकरण है अन्तिम मूल्य भी कई प्रकार से अन्तिम मूल्य है । ईश्वर सभी मूल्यों के मूल हैं लेकिन प्रयोगवादी डी.वी ने मूल्यों का मूल समाज को माना है।*
5. *अस्थाई तथा सीमित मूल्य मनुष्य द्वारा भोगे जाते हैं ये मूल्य समाज के व्यक्तियों को समाज की कियाओं में भाग लेने से मिलता है। नई परीस्थितियों के आने से प्रायः ये अस्थाई हुआ करते हैं।*
6. *कुछ मूल्य वैज्ञानिक तथा सामाजिक मूल्य भी कहे जाते हैं व्यक्ति के कुछ अपने मूल्य होते हैं जो एक दूसरे को अलग–अलग करते हैं कोई व्यक्ति ईश्वर को मानता है तो कोई प्रकृति को अतएव दानो मूल्य वैयक्तिक होगे परन्तु यह नियश्चय है कि व्यक्ति स्वयमेव जीवित इकाई के रूप में नहीं रह सकता क्योकि समाज की रचना इतनी जटिल है अतः उसे कुछ सामान्य सामाजिक मूल्यों को मानना पड़ता है।*

Scanned with OKEN Scanner

7. भौतिक तथा अभौतिक मूल्यों का भी एक वर्गीकरण है भौतिक पदार्थो से प्राप्त मूल्य भौतिक कहलाते हैं। अभौतिक अथवा अपार्थिव जगत से सम्बन्धित मूल्य दूसरे प्रकार का होता है अभौतिक मूल्य को आध्यात्मिक मूल्य कहा जा सकता है।
8. उच्चतम एवं निम्नतम मूल्य का वर्गीकरण विवाद ग्रस्त है निम्नतम मूल्यों के अन्तर्गत वे साधारण इच्छाएं होती हैं जिन्हें पाश्विक तृष्णा कहते हैं उच्चतम मूल्य विवेक से निर्धारित होते हैं। विचारात्मक और बौद्धिक मूल्य इसी वर्ग में आते है।
9. अन्त में शैक्षिक मूल्यो वर्ग दिया जाता है वे मूल्य ब्रबेकर ने निम्नलिखित बताये हैं जिनको उसने शिक्षा के उद्देश्य से संयुक्त किया है।

अ–स्वस्थ्य मूल्य ब–बौद्धिक मूल्य जो आधारभूत शैक्षिक प्रकियाओं को आदेशित करती है स–भावात्मक या मानवीय मूल्य जिसमें योग्य गृह सदस्यता प्राप्त होती है। द–व्यवसायिक मूल्य या आर्थिक मूल्य व–नागरिकता के मूल्य जिनकी प्राप्ति नागरिकता की शिक्षा से प्राप्त होती है र–सांस्कृतिक मनोरचनात्मक आदि मूल्य जो अवकाश काल के उपयोग से प्राप्त होता है ल–नैतिक मूल्य जो नैतिक चरित्र से सम्बन्ध रखता है। व–धार्मिक मूल्य इस सूची को देखने से पता चलता है कि ये शैक्षिक मूल्य जीवन की विभिन्न आवश्यकताए लक्ष्यों से सम्बन्ध रखते हैं प्रायः सभी उपरोक्त कथित मूल्यों का समावेश करता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. माथुर डा0एम0एस0 : शिक्षा सिद्धान्त आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर
2. जयसवाल डा0 सीताराम : तुलनात्मक शिक्षा लखनऊ प्रकाशन केन्द्र रेलवे कसिंग सीतापुर रोड,लखनऊ
3. सिंह तोमर प्रो0 राम विहारी : प्रगति समाज शास्त्रीय सिद्धान्त अजमेर दत्तब्रदर्स कचहरी रोड
4. मुखर्जी डा0 राधा कमल : मूल्यों का सामाजिक ढांचा नई दिल्ली एस चन्द्र एण्ड कम्पनी
5. राकी मिल्टन द नेचर आफ हयुमेन वैल्यूज न्यूयार्क प्रीफेड
6. गोपाल के विद्यामेघ मेरठ विद्या प्रकाशन
7. त्यागी जी0एस0डी0शिक्षा के सिद्धान्त आगरा,विनोड पुस्तक मन्दिर
8. मुकर्जी श्रीमती संध्या शिक्षा दर्शन लखनऊ प्रकाशन केन्द्र सीतापुर रोड,रेलवे कासिंग

Scanned with OKEN Scanner